विषय : हिन्दी–3

कक्षा : आठवीं

महीना : मार्च

प्रथम स्तर

संदर्भ पाठ – 'कश्मीरी सेब'

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी)

कक्षा :- आठवीं **विषय :- हिन्दी[3]**

विद्यार्थियों में कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन के सन्दर्भ में साथ ही व्याकरणिक कमियों को सुधारने हेतु यह संसाधन-इकाई (प्रथम स्तर) के रूप में प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य साहित्य की एक अन्यतम रोचक विधा 'कहानी' की सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ कहानी कैसे सुनी जाए, कैसे पढ़ी जाए, कैसे कही जाए और कैसे लिखी जाए-इन सबका समुचित ज्ञान हमलोगों को इस संसाधन-इकाई को सही तरीके से सीखने-समझने से मिल जाएगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- ⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए हमें कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस कला से जुड़ा हुआ आनन्द भी मिलेगा। सम्बद्ध कहानी से नैतिकता और सदाचार का पाठ भी प्राप्त होगा। यह एक छोटी-सी पर बड़ी ही प्रासंगिक और शिक्षाप्रद कहानी है।
- ⇨ मानव जीवन पर पड़ने वाले कहानी के प्रभाव की अनुभूति भी हमें होगी।
- ⇨ सन्दर्भित कहानी के जरिए संज्ञाओं के भेद संबंधी व्यावहारिक ज्ञान से भी हमलोग परिचित हो सकेंगे।
- ⇨ इस कहानी के जरिए संज्ञा के साथ-साथ विशेषणों के भेदो के बारे में प्रयोग संबंधी व्यावहारिक ज्ञान से भी हमलोग परिचित हो सकेंगे।

सन्दर्भ पाठ :

पाठ -२: 'कश्मीरी सेब' (कहानी) :

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति-2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। किस्से-कहानियों का प्रचलन हमारे समाज में अत्यन्त प्राचीन काल से ही रहा है। परन्तु कलात्मक कहानियाँ आधुनिक काल में ही रची गयी हैं। कहानी वस्तुत: मनुष्य के यथार्थ जीवन की काल्पनिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति हुआ करती है। इससे हमें भरपूर आनन्द के साथ-साथ जीवन के लिए उपयोगी नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा भी मिलती है। हमें इन बातों की जानकारी होनी चाहिए कि कहानी किस प्रकार से सुनी-सुनायी जाती है, पढ़ी-पढ़ायी जाती है, लिखी-लिखायी जाती है, इत्यादि। इन्हीं बातों को इस संसाधन-इकाई में **'कश्मीरी सेब'** शीर्षक पाठ के सन्दर्भ में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

कहानी बच्चों के लिए मनोरंजन का साधन होने के साथ ही यह नैतिकता का पाठ भी पढ़ाती है। बड़ों के मुँह से कहानी सुनना बच्चों को अच्छा लगता है। स्वाभाविकतया इसके प्रति विद्यार्थी की रुचि और ध्यान दोनों रहते हैं।

कहानी सुनकर विद्यार्थी श्रवण में दक्षता प्राप्त करते हुए शुद्धता से पढ़ने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शुद्ध श्रवण से शुद्ध पठन की सम्प्राप्ति होती है और मनोरंजक तथा ज्ञान देनेवाली बच्चों की उपयोगी कहानी से वे इसके श्रवण, पठन के अलावा इसपर रचनात्मक दक्षता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह प्रस्तुत संसाधन इकाई से विद्यार्थियों के साथ-साथ हम सभी कहानी के पठन, श्रवण और लेखन का महत्व समझ पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ?

- ⇨ कहानी के पठन, श्रवण, कथन और लेखन के कौशल का ज्ञान मिलेगा।
- ⇨ कहानी के जरिए नैतिकता और सदाचार की सीख प्राप्त करेंगे।
- ⇨ व्याकरणिक दृष्टि से इस कहानी के जरिए संज्ञा के भेदों के बारे में ज्ञान प्राप्त केरेंगे।
- ⇨ पाठ आधारित सामान्य व्याकरण के अंतर्गत विशेषण के भेदों के बारे में सामान्य ज्ञान भी हमें मिलेगा।
- ⇨ कहानी, किस्से आदि के लेखन और इनके सृजन हेतु विद्यार्थियों के साथ-साथ हम सब प्रेरित होंगे।

प्रस्तुत संसाधन इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :-

- ⇨ अध्यापक नियमित रूप से कक्षा में विद्यार्थियों के उपयोगी किस्से कहानी सुनायेंगे और उसके संदेश को समझायेंगे और लिखवायेंगे भी।
- ⇨ शुद्धता से पाठ्य पुस्तक में निर्धारित कहानी का पठन-पाठन करेंगे, साथ ही विद्यार्थियों से भी इसका वाचन करवायेंगे। आवश्यक व्याख्या देंगे, प्रश्न पूछेंगे और उनका हल भी बतायेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से अध्यापक सहजता से प्राप्त छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह करवायेंगे और संगृहीत कहानियों को वे अन्य विद्यार्थियों को स्वयं सुनायेंगे अथवा संग्रह करनेवाले बिद्यार्थी को सुनाने के लिए कहेंगे।
- ⇨ अध्यापक किसी विषय, घटना या नैतिकता की सीख सम्बन्धी विषय या बात पर विद्यार्थियों से कहानी लेखन का अभ्यास करायेंगे। इसके लिए अध्यापक आवश्यक मार्ग-दर्शन करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों में कहानी-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे। ऐसा करने पर कहानी-लेखन के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी और चिंतन तथा कल्पना शक्ति का विकास होगा। उनकी सर्जनात्मक दक्षता बढ़ेगी।
- ⇨ व्याकरण के ज्ञान देने के लिए आवश्यक चार्ट, ओडिओ, वीडिओ आदि कक्षा में उपलब्ध करायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया कलाप -1 : शिक्षक क्या करेंगे ?

कक्षा में कहानी-कथन शिक्षण का एक सशक्त माध्यम है। यह कहानी मजेदार, प्रेरणादायी तथा नैतिक शिक्षा की धूरी भी हो सकती है। अध्यापक पहले प्रस्तुत कहानी 'कश्मीरी सेब' की समुचित कथा को श्रुति-मधुरता के साथ विद्यार्थियों को सुनायेंगे और समझायेंगे। विद्यार्थी एकाग्रता के साथ उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। कहानी में निहित नैतिक शिक्षा को वे भली-भाँति इसके तात्पर्य सहित विद्यार्थियों को बतायेंगे। इसके साथ उदाहरण के लिए अन्य आकर्षक कहानी भी यथावश्यक सुनायेंगे।

इसके बाद अध्यापक शुद्ध लय, गति, उच्चारण के साथ प्रस्तुत कहानी को पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। आवश्यकतानुसार अध्यापक मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर, उनको दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में वे पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक उसे सुनेंगे।

आएँ, हम सब सोचें :

- ★ आपके विद्यार्थी प्रस्तुत कहानी को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?
- ★ कहानी सुनकर उन्हें आनन्द की प्राप्ति हो रही है या नहीं ?
- ★ कहानी को पठन की शुद्धता के साथ वे पढ़ पाये हैं या नहीं ?
- ★ कहानी की अंतनिर्हित नैतिक शिक्षा को वे समझ पाये हैं या नहीं ?

क्रियाकलाप -2 : क्षेत्र अध्ययन- 1:

कमल बरुवा नगाँव के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। वे कैसे अपने विद्यार्थियों को कहानी पढ़ाते हैं, उसी का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है-

वे कहानी पढ़ाने के लिए अपनी माता से सुनी कहानियों के कुछ कौशलों का प्रयोग करके विद्यार्थियों को कहानी सुनाते हैं। लगा। इस तरह नियमित रूप से अध्यापक द्वारा कही गई कहानियों को सुनकर वे आनंद प्राप्त करते हैं। कुछ शिक्षक स्मृति में संचित कहानी को सुनाने में रुचि रखते हैं, कुछ किताबों से पढ़कर सुनाना अच्छा पाते हैं। लेकिन यह अध्यापक अपने विद्यार्थियों के सामने एक विशेष कौशल का प्रयोग करके कहानी सुनाने की चेष्टा करते हैं।

कहानी के भिन्न-मिल चरित्रों को वे आवश्यकतानुसार अलग-अलग आवाजें देकर शारीरिक भंगिमा के साथ कहानी सुनाते हैं। उन्हें लगता है- इस तरह कहानी कथन से विद्यार्थी को आनंद मिलता है और वे कहानी भी समझ लेते हैं। साथ ही अध्यापक महोदय कहानी सुनाते समय अपने विद्यार्थियों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने समझा है या नहीं या उसके प्रति आग्रही हैं या नहीं-उसे भी जान लेते हैं।

अब देखा गया - इस अध्यापक द्वारा प्रस्तुत कहानी-कथन या कहानी -शिक्षण ने किस तरह विद्यार्थियों को प्रभावित किया और वे कहानी-कथन में सफल हुए। अत: हम हिन्दी शिक्षकगण भी इस पद्धति को अपनाकर विद्यार्थियों को कहानी सुनाते-पढ़ाते हुए प्रासंगिक सीख दे सकते हैं।

आएँ, हम सब सोचें :

⇨ अध्यापक का अपनी आवाजों में भिन्नता का कौशल कितना महत्वपूर्ण है ?

⇨ उनका शारीरिक भंगिमाओं का प्रयोग आवश्यक है या नहीं ?

⇨ विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर इनका प्रभाव कितना महत्वपूर्ण है

क्रियाकलाप -3 : प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन :

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे कहानी संबंधी प्रश्नों का निराकरण :- एक चुना हुआ पाठांश (पाठ-कश्मीरी सेब)- 'दुकानदार ने कहा- बाबूजी, ... साफ धोखा है।' (किताब से पाठ-१३ के इस पाठांश का उल्लेख करना आवश्यक है।)

प्र: 1: लेखक ने दुकानदार से कितने सेब माँगे ?

प्र: 2: लेखक ने दुकानदार को कितने पैसे दिए ?

प्र: 3: फल खाने का उपयुक्त समय क्या है ?

प्र: 4: सेब खाने के क्या-क्या लाभ हैं ?

प्र: 5: सड़े हुए सेबों को देखकर ठगे जाने का अहसास लेखक को कैसे होता है ?

प्र: 6: कहानी का मूल आशय 'जागो, ग्राहक जागो' किस तरह प्रतिफलित होता है ?

प्रतिफलन :

⇨ कहनी को पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर तैयार करेंगे। (लिखित या मौखिक)

⇨ लिखने और बोलने में शुद्धता और गलतियाँ नजर आयेंगी। उनमें होनेवाली गलतियों को समयानुसार सुधार देने से उनमें सुधार होंगे।

⇨ इस प्रकार विद्यार्थी प्रश्नों के जवाब दूढ़ने के लिए मन से पूरे पाठांश को पढ़ेंगे और कक्षा से जुड़े रहेंगे।

⇨ अपनी ज्ञान-बुद्धि से सही-गलत का निर्णय कर पायेंगे।

क्रियाकलाप -4 : पाठ-आधारित व्याकरण-शिक्षण :

चूँकि तीसरी भाषा हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए आठवीं कक्षा में व्याकरण की अलग पाठ्य पुस्तक की व्यवस्था नहीं है, अत: सभी पाठों के साथ व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था है। शिक्षक-शिक्षिकागण अपने अनुभव से विद्यर्थियों के व्याकरणिक ज्ञान की बढ़ाने का प्रयास करें।

इस पाठ में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से संज्ञा के भेदों पर ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए अध्यापक पाठ में प्रयुक्त तीनों प्रकार की संज्ञाओं को छाँटकर क्रियाकलाप के रूप में उन्हें सिखाने का प्रयास करेंगे। अवश्य ही संज्ञा शब्दों के अन्य और दो भेद वस्तुवाचक और समूहवाचक संज्ञा-शब्द जातिवाचक संज्ञा-शब्दों के अंतर्गत आते हैं।

अभ्यास तालिका-1 : (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

1. जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मंत्री थे।
1. रमा पढ़ती है।
2. यह लालकिला है।
3. दिल्ली भारत की राजधानी है।

अध्यापक इन वाक्यों को सही उच्चारण से पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वाक्यों को कक्षा में पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

व्यक्तिवाचक संज्ञा के सही ज्ञान देने के लिए अध्यापक रेखांकित शब्दों के सहारे जैसे- जवाहरलाल नेहरू, रमा, लालकिला, दिल्ली आदि को लेकर व्यक्तिवाचक संज्ञा को समझाने का प्रयास करेंगे।

अध्यापक ऊपर के वाक्यों के द्वारा स्थान और व्यक्ति विशेष से संबंधित संज्ञा-शब्द व्यक्ति वाचक संज्ञा है यह अच्छी तरह समझाकर श्याम पट्ट पर परिभाषा लिख देंगे।

अभ्यास तालिका-2 : (जातिवाचक संज्ञा)

1. गाय उपकारी जानवर है।
2. पुस्तक से हमें ज्ञान प्राप्त होता है।
3. माली पौधों को पानी दे रहा है।

अध्यापक रेखांकित शब्दों का उल्लेख करते हुये वाक्यों को सही उच्चारण के साथ पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुये वाक्यों को कक्षा में पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्छे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

जातिवाचक संज्ञा के सही ज्ञान देने के लिए रेखांकित शब्दों के सहारे जैसे- गाय, पुस्तक, माली आदि को लेकर जातिवाचक संज्ञा को समझाने का प्रयास करेंगे।

अध्यापक इन वाक्यों के द्वारा प्राणी, वस्तु आदि की पूरी जाति का बोध करानेवाले संज्ञा-शब्द को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, यह समझाने का प्रयास करेंगे और श्यामपट्ट पर परिभाषा लिख देंगे।

परिभाषा : जिन संज्ञा-शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु आदि की पूरी जाति का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

अभ्यास तालिका-3 : (भाववाचक संज्ञा)

1. दोस्तों की सहायता अवश्य करनी चाहिए।

2. बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है।

3. आम में मिठास है।

अध्यापक लिखित वाक्यों को सही उच्चारण से पढ़ेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करके इन वाक्यों को कक्षा में उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यान से सुनेंगे।

भाववाचक संज्ञा के सही ज्ञान देने के लिये रेखांकित शब्दों जैसे- सहायता, बुढ़ापा, बचपन मिठास आदि को लेकर भाववाचक संज्ञा को समझाने का प्रयास करेंगे।

अध्यापक इन वाक्यों के द्वारा किसी व्यक्ति के कार्य, अवस्था, गुण, दशा आदि के बोध कराने वाले संज्ञा शब्द भाववाचक संज्ञा हैं, इसे अच्छी तरह से समझाने का प्रयास करेंगे और परिभाषा श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

क्रियाकलाप-5 :

इस पाठ में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से संज्ञा के भेदों के साथ-साथ विशेषण का ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए अध्यापक इस पाठ में प्रयुक्त विशेषण शब्दों को ध्यान में रखकर पाठ को पढ़ेंगे। अध्यापक विषयवस्तु को पढ़ाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के श्रेणी-स्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें सामान्य व्याकरण के अंग विशेषण के प्रयोग, प्रकार आदि के बारे में ठीक तरह से सिखायेंगे और इसके लिए पाठ में प्रयुक्त विशेषणों से जुड़े वाक्यों को लेकर उन्हें सिखाने का प्रयास करेंगे। जैसे-

1. काला कुत्ता भौंक रहा है।
2. गुलाबी सेब सजे हुए हैं।
3. सड़ा हुआ सेब, एक भी खाने के लायक नहीं है।
4. यह ऊँचा पेड़ है।

अध्यापक लिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों को जोर से पढ़कर सुनायेंगे और विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे। विद्यार्थियों को भी एकल रूप में उच्चारण करने देंगे और इनकी विशेषता क्या है- अध्यापक समझायेंगे।

इसी प्रकार अध्यापक विद्यार्थियों से विशेषण के बारे में परिभाषा निकलवायेंगे और उन्हें विशेषण के ज्ञान देने में सफल होंगे।

क्रियाकलाप-6 :

अध्यापक अनेक उदाहरणों और गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को विशेषण के प्रकारों के बारे में ज्ञान देने का प्रयास करेंगे-

1. बाजार से मीठा आम लाना।

2. मेरे विद्यालय में पंद्रह कमरे है।

3. गिलास में थोड़ा दूध है।

4. वह लड़का खेल रहा है।

अध्यापक इन वाक्यों को सही उच्चारण के साथ पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यान से सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से मौन वाचन भी करवायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वाक्यों को कक्षा में पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

विशेषण और विशेषण के प्रकारों के बारे में सही ज्ञान देने के लिए अध्यापक रेखांकित शब्दों के सहारे, जैसे- मीठा आम, पंद्रह कमरे, थोड़ा दूध, वह लड़का आदि को लेकर विशेषण के प्रकारों को समझाने का प्रयास करेंगे।

ऊपर के वाक्यों के रेखांकित शब्द संज्ञा की विशेषता बता रहे हैं। जैसे- 'मीठा' शब्द आम की विशेषता अर्थात् गुण, 'पंद्रह' शब्द कमरे की विशेषता अर्थात् संख्या, 'थोड़ा' शब्द दूध की विशेषता अर्थात् परिमाण और 'वह' शब्द लड़के की विशेषता बता रहे हैं। ये विशेषण हैं। विशेषण के मुख्यत: चार भेद हैं- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक और सर्वनाम वाचक या सार्वनामिक विशेषण।

इन उदाहरणों के द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों को विशेषण के प्रकारों को प्रश्नोत्तर शैली से समझाने का प्रयास करेंगे।

आएँ, हम सोंचें :

⇨ विद्यार्थी उदाहरणों को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?

⇨ वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण शब्दों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो रहा है या नहीं ?

⇨ संज्ञा और विशेषण के बारे में सही ज्ञान हो रहा है या नहीं ?

⇨ वाक्य में विशेषण का प्रयोग ठीक तरह से कर सके हैं या नहीं ?

क्रियाकलाप-7 :

सुदृढ़ीकरण : सुदृढ़ीकरण के लिए अध्यापक एक अनुच्छेद के सहारे सिखाने का प्रयास करेंगे-

अनुच्छेद इस प्रकार है-

रोहन एक अच्छा लड़का है। वह मधुर स्वर से गीत गाता है। उसके पास गीतों के बारह संकलन हैं। सरिता भी अच्छी लड़की है। वह बढ़िया नाचती है। उसका नृत्य देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। दोनों को कई पुरस्कार भी मिले हैं।

अध्यापक अनुच्छेद को सही उच्चारण और गति के साथ पढ़कर, विद्यार्थियों से निर्देश करेंगे कि अपनी-अपनी कापी निकालकर अनुच्छेद से विशेषण शब्द छाँटकर लिखें। साथ ही किस प्रकार के विशेषण हैं उसका उल्लेख करें।

उसके बाद अध्यापक विद्यार्थियों को एकक या दलगत रूप से प्रत्येक विशेषण शब्द, जैसे- अच्छा, मधुर, बारह, अच्छी, बढ़िया, मोहित, कई आदि को लेकर ये क्यों विशेषण शब्द हैं और किस प्रकार के विशेषण हैं, पूछकर समझाने का प्रयास करेंगे।

आएँ, हम सोंचें :

⇨ क्या इस तरह की प्रश्नोत्तर शैली से दी गयी शिक्षा अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है ?

⇨ भाषा-अध्ययन की दृष्टि से विशेषण का महत्व क्या है ?

⇨ हिन्दी भाषा लिखने में इसकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है ?

⇨ प्रायोगिक अर्थात् व्यावहारिक दृष्टि से भाषा-ज्ञान कराने में इससे कैसे सहायता पहुँच सकती है ?

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन इकाई 'कश्मीरी सेब' के माध्यम से शिक्षाप्रद कहानी- पाठ के श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक ज्ञान-प्राप्ति पर आलोकपात किया गया है। साथ ही 'ग्राहक सुरक्षा' के संबंध में तथा इसके महत्व को समझ पायेंगे। व्यावहारिक व्याकरण-ज्ञान के अंतर्गत हमें संज्ञा और विशेषण शब्दों का ज्ञान भी मिलेगा।

विस्तारित गतिविधियाँ :

आपकी कक्षा के विद्यार्थी कम से कम चार या पाँच हिन्दी या किसी भी भाषा में लिखी गयी छोटी और सरल कहानियों को चुने और उनका संग्रह करें। इसके लिए अध्यापक उन्हें आवश्यक निर्देश देंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

व्याकरणिक शुद्धता का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक निम्नलिखित पुस्तकों की मदद ले सकते हैं।

★ आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ मानक हिन्दी व्याकरण और रचना

★ सरस्वती मानक व्याकरण

★ **TESS India Metarials**

★ **E Pathshala Metarials**

★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

प्रश्न-भण्डार :

(क) 'ग्राहक सुरक्षा' विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

(ख) सेब खाने के क्या-क्या लाभ हैं ?

(ग) कहानी के मूल आशय 'जागो ग्राहक जागो'का किस तरह अनुभव करवायेंगे ?

पुनरीक्षण :
डॉ. अच्युत शर्मा,
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
गुवाहाटी विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता :
डॉ. अन्जलि काकति, वरिष्ठ व्याख्याता,
हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
उत्तर गुवाहाटी

★★★★★★★